प्रश्न-1. गरीबी, बेरोजगारी और क्षेत्रीय असमानता के मुद्दों को संबोधित करने में भारत में आर्थिक नियोजन की उपलब्धियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करें। प्रासंगिक उदाहरण प्रस्तुत करें।

उत्तर:

भूमिका

भारत में आर्थिक नियोजन सतत विकास लक्ष्य 1 (SDG 1) को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण रहा है, जिसमें गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस दिशा में प्रगति के बावजूद, समावेशी विकास, गुणवत्तापूर्ण रोजगार और क्षेत्रीय असंतुलनों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने में चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

गरीबी उन्मूलन: उपलब्धियां

1. **गरीबी में कमी:** 1993-94 में 45% से घटकर 2011-12 में 21.9% (तेन्दुलकर समिति) तक गरीबी में कमी आई।
   - पहल: एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (1978), मनरेगा (2005)।
   - प्रभाव: हरित क्रांति ने ग्रामीण आय बढ़ाई और भुखमरी को कम किया।
2. **चुनौतियाँ:** ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में निरन्तर गरीबी असमान प्रगति को उजागर करती है।

बेरोजगारी से निपटने में उपलब्धियां

1. **रोजगार सृजन:**
   - प्रथम योजना ने कृषि पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे ग्रामीण रोजगार सृजित हुआ।
   - द्वितीय और तृतीय योजनाओं की औद्योगिक नीतियों ने शहरी रोजगार का विस्तार किया।
   - मनरेगा ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में 2.65 अरब मानव-दिवस कार्य का सृजन किया।
2. **चुनौतियाँ:** शिक्षित बेरोजगारी और अनौपचारिक क्षेत्र का वर्चस्व प्रमुख समस्याएँ हैं।

क्षेत्रीय असमानता का समाधान

1. **बुनियादी ढांचे का विकास:** पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि (BRGF) जैसी पहलों के माध्यम से पिछड़े क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना।
   - औद्योगिक गलियारों ने मध्य प्रदेश जैसे अविकसित राज्यों में विकास को प्रोत्साहित किया।
2. **चुनौतियाँ:** स्वास्थ्य, शिक्षा और GDP योगदान में दक्षिणी राज्यों की तुलना में उत्तरी राज्यों का प्रदर्शन कमजोर रहा है।

आलोचनात्मक विश्लेषण

- गरीबी और बेरोजगारी में उल्लेखनीय कमी आई है, लेकिन क्षेत्रीय असमानताएँ अभी भी बनी हुई हैं।
- नीतियों के कार्यान्वयन में एकरूपता की कमी, कल्याणकारी योजनाओं में अनियमितता और गुणवत्तापूर्ण रोजगार पर अपर्याप्त ध्यान।
- नीति आयोग का आकांक्षी जिला कार्यक्रम इन अंतरालों को पाटने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

निष्कर्ष

भारत में आर्थिक नियोजन ने महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है, लेकिन समावेशी और संतुलित विकास के लिए लक्षित सुधारों की आवश्यकता है। सतत प्रगति के लिए संरचनात्मक खामियों को दूर करना आवश्यक है।

Chanakya Ias

प्रश्न-2. समावेशी विकास को परिभाषित करें और भारत में सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा करें।

उत्तर:

भूमिका

समावेशी विकास का तात्पर्य ऐसा आर्थिक विकास है जो समान, सहभागितापूर्ण और सतत हो, जिससे समाज के सभी वर्गों, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समूहों को लाभ मिले। यह सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) जैसे SDG 1 (गरीबी उन्मूलन), SDG 10 (असमानताओं में कमी), और SDG 8 (सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास) के साथ संरेखित है।

समावेशी विकास की परिभाषा

समावेशी विकास में निम्नलिखित शामिल हैं:

- संसाधनों का समान वितरण।
- निर्णय लेने में सामाजिक सहभागिता।
- अंतर-पीढ़ीगत समानता सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा।

SDGs को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका

1. **गरीबी उन्मूलन (SDG 1):**
   - समावेशी विकास पीएम-किसान और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (2013) जैसी लक्षित योजनाओं पर ध्यान-केंद्रित करता है, जिससे आय सुरक्षा में सुधार और भुखमरी में कमी आई है।
   - गरीबी 2011-12 के 21.9% से घटकर 2020 में अनुमानित 15% रह गई।
2. **असमानताओं में कमी (SDG 10):**
   - आकांक्षी जिला कार्यक्रम जैसी पहलें पिछड़े जिलों में स्वास्थ्य, शिक्षा, और बुनियादी ढांचे में सुधार के माध्यम से क्षेत्रीय असमानताओं को कम करती हैं।
3. **लैंगिक समानता (SDG 5):**
   - बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और मुद्रा योजना जैसे कार्यक्रम महिलाओं को सशक्त बनाते हैं, जिससे उनकी आर्थिक और सामाजिक भागीदारी बढ़ती है।
4. **सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास (SDG 8):**
   - स्किल इंडिया मिशन और मनरेगा जैसी योजनाएँ रोजगार सृजन और आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं, जिससे समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है।
5. **पर्यावरणीय स्थिरता (SDG 13):**
   - समावेशी विकास पर्यावरणीय लक्ष्यों को एकीकृत करता है, जैसे पीएम-कुसुम और राष्ट्रीय सौर मिशन के माध्यम से हरित ऊर्जा को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

भारत को 2030 तक अपने SDG लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समावेशी विकास अत्यावश्यक है। असमानताओं को दूर करके और सतत विकास सुनिश्चित करके, यह एक लोचशील और समतामूलक समाज के लिए मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इसके सफल कार्यान्वयन और जवाबदेही पर ध्यान देना जरूरी है।

Chanakya ias

प्रश्न-3. भारत के आर्थिक विकास में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के महत्व का विश्लेषण करें। इस क्षेत्र की वृद्धि के लिए प्रमुख चुनौतियाँ और अवसर क्या हैं?

उत्तर:

भूमिका

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विनिर्माण जीडीपी में 9% और निर्यात में 13% का योगदान देता है। इसका बाजार आकार 2025 तक $535 बिलियन तक पहुँचने का अनुमान है। खाद्य एवं प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के अनुसार यह उद्योग 1.93 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है तथा वार्षिक फसलोत्तर नुकसान को 90,000 करोड़ रुपये तक कम करता है, जिससे मूल्य संवर्धन और कृषि लाभप्रदता में वृद्धि सुनिश्चित होती है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का महत्व

- आर्थिक वृद्धि और मूल्य संवर्धन
  - कृषि उत्पादन को बढ़ावा देकर ग्रामीण आय और राष्ट्रीय निर्यात में योगदान देता है।
  - वित्तीय वर्ष 2022 में रु. 2.6 लाख करोड़ का निर्यात किया।
- **रोजगार सृजन**
  - लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण विकास और उद्यमशीलता को बढ़ावा मिलता है।
- अपव्यय में कमी
  - भंडारण और प्रसंस्करण सुधार कर भारी नुकसान को कम करता है।
- किसानों की आय में सुधार
  - बेहतर मूल्य निर्धारण और प्रसंस्करण समर्थन के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाता है।

प्रमुख चुनौतियाँ

1. **बुनियादी ढांचे की कमी:** शीत भंडारण सुविधाओं और आपूर्ति श्रृंखलाओं की अनुपलब्धता।
2. **विखंडित बाजार:** असंगठित क्षेत्रों का प्रभुत्व, जो विस्तार को प्रभावित करता है।
3. **वित्तीय सीमाएँ:** छोटे और मध्यम उद्यमों (SMEs) और स्टार्टअप्स के लिए सीमित ऋण उपलब्धता।

विकास के अवसर

1. **सरकारी योजनाएँ:** पीएमकेएसवाई (PMKSY) और उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ निवेश और नवाचार को बढ़ावा देती हैं।
2. निर्यात की संभावनाएँ: जैविक और पैकेज्ड खाद्य पदार्थों की वैश्विक मांग बढ़ रही है।
3. तकनीकी प्रगति: एआई और आईओटी प्रक्रियाओं को बेहतर बनाकर और अपव्यय को कम करके उद्योग को कुशल बनाते हैं।

निष्कर्ष

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग भारत के आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह रोजगार और निर्यात में वृद्धि का माध्यम है। यदि बुनियादी ढांचे की कमियों को दूर किया जाए और नवाचार को बढ़ावा दिया जाए, तो यह उद्योग वैश्विक स्तर पर प्रमुख शक्ति बन सकता है।

Chronicle ias

प्रश्न-4. भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को आकार देने में वैश्वीकरण की भूमिका पर चर्चा करें। उपयुक्त उदाहरणों के साथ इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को उजागर करें।

उत्तर:

वैश्वीकरण और भारतीय महिलाओं की स्थिति

वैश्वीकरण ने भारत में महिलाओं की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, जिससे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के अवसर उत्पन्न हुए हैं। हालांकि, इसने चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं, जिससे मिश्रित परिणाम सामने आए हैं।

सकारात्मक प्रभाव

+ **आर्थिक सशक्तीकरण**

❖ कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी 2021 में 25.1% तक बढ़ी (ILO)।

❖ **उदाहरण:** आईटी क्षेत्र और महिला उद्यमियों द्वारा संचालित स्टार्टअप।

+ **शिक्षा तक पहुँच**

❖ उच्च शिक्षा में लड़कियों के नामांकन में वृद्धि; 2021-22 में महिलाओं का सकल नामांकन अनुपात (GER) 27.3% तक पहुँचा।

+ **सामाजिक जागरूकता**

❖ #MeToo जैसे वैश्विक आंदोलनों के बढ़ते प्रभाव ने महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

नकारात्मक प्रभाव

+ **सांस्कृतिक चुनौतियाँ**

❖ वैश्विक उपभोक्तावाद ने शारीरिक छवि के मुद्दों और रूढ़िवादिता को बढ़ावा दिया।

+ **आर्थिक असमानताएँ**

❖ लिंग आधारित वेतन अंतर 19% पर बना हुआ है।

❖ भारत 193 देशों में 108वें स्थान पर है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया है, लेकिन साथ ही असमानताओं और सांस्कृतिक चुनौतियों को भी बढ़ावा दिया है। समावेशी प्रगति के लिए लिंग-संवेदनशील नीतियों के साथ एक संतुलित दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।

Chronicle ias